ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3742

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

जैन संस्कृति/धर्म में चित्रकला-मण्डल विधान के विशेष संदर्भ में

डॉ. निशा मोदी [1]

[1] सह-प्राध्यापक, समाजशास्त्र, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन, इंदौर

शोध-सारांश

सृष्टी के आरम्भ से ही मनुष्य ने अपनी आवश्यकतओं को पूर्ण करने जिन वस्तुओं का निर्माण किया वह उसकी संस्कृति है - मूर्त रूप और अमूर्त रूप दोनों में। उदा. आवास, वस्त्र व्यवहार, विचार, मनोवृतियाँ, विश्वास, धर्म, कला इत्यादि। काल परिवर्तन के साथ आज मनुष्य प्रौद्योगिकी युग में तो आ गया परंतु मानव मूल्य विहीनता में वृद्धि होती गई। मनुष्य अशांत और अपराधी हो गये। गीता के अनुसार दुर्गुणों में वृद्धि होती गई। महावीर, बुद्ध, गांधी के देश में इस अज्ञान और अंधकार से बाहर आने के अनेक मार्गों में एक है - पूजा-स्तुति, धर्माचरण के मार्ग पर चलकर सदगुणों का विकास करना।

जैन संस्कृति और धर्म में सुसंस्कृत जीवन के विकास के लिये परमात्मा, परमेष्ठी की उपासना को आज के मानव की अति आवश्यकता बताई गई है। चित्र शैली में जैन संस्कृति में अनेक उदेश्यो को पूर्ण करने मण्डल विधान की रचना की गई है। यह शोध पत्र इन्हीं मण्डल पर आधारित है।

मुख्य शब्द – मण्डल, विधान, धर्म, संस्कृति, रत्नत्रयी, अष्टद्रव्य, अष्टप्रतिहार्य।

Cite This Article: डॉ. निशा मोदी. (2019). "जैन संस्कृति/धर्म में चित्रकला-मण्डल विधान के विशेष संदर्भ में." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 235-240. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592555.

अध्ययन का उद्देश्य –

श्रद्धा, ज्ञान, सदाचार, विनय, सत्य, संयम, सभा आदि मानवीय गुणों की प्राप्ति के लिए, अज्ञान और अंधकार दूर करने के लिए मण्डल विधान पूजा उपासना द्वारा ज्ञान एवं सदगुणों को प्राप्त करना शोध पत्र का उद्देश्य है।

अध्ययन विधि –

शोध पत्र में द्वितीय तथ्य संकलन के आधार पर विवेचनात्मक विवरण किया गया है। साथ ही जैन मंदिर से सर्वेक्षण कर मण्डल विधान (चित्र) प्राप्त किये गये हैं। प. पूज्य 108 उपाध्याय श्री विप्रणतसागरजी महाराज से मण्डल विधान के संबंध में साक्षात्कार भी लिया गया। जो वर्तमान समय में नेमीनगर, जैन कालोनी मंदिर में चौमासा कर रहे हैं। प्रसिद्ध मानव-वैज्ञानिक ई.बी. टायलर ने कहा है "संस्कृति वह जटिल संपूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कलाएं, नैतिकता, विधि, प्रथाएं और वे सभी योजनाएं एवं क्षमताएं सम्मिलित हैं जिन्हें समाज के एक सदस्य के रूप में मानव अर्जित करता है।"[1] अर्थात् हमारे व्यवहार की अभिव्यक्ति संस्कृति

कहलाती है। संस्कृति सभी व्यवहार प्रतिमानों के लिए प्रयुक्त सामूहिक शब्द है, जो सामाजिक रूप से अर्जित है और सामाजिक रूप से इसे हस्तांतरित भी किया जाता है।

धर्म संस्कृति का एक अंग है कि किंग्सले डेविस ने धर्म को मानव समाज का शाश्वत, सर्वव्यापी और स्थाई तत्व बताया है जिसे समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता है।[2] समाजशास्त्री दुर्खीम धर्म को पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों और कर्मकाण्डों की एक संगठित व्यवस्था कहते हैं जो उन व्यक्तियों को एक एकल, सामाजिक और नैतिक समुदाय से बांधता है जो इसका अनुसरण करते हैं।[3] संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग कला है। कहा जाता है मानव संस्कृति की उपज कला है साथ ही मानव की भावनाओं, कल्पनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भी कला है। ''कलांति ददाति कला'' अर्थात् सौंदर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने की वस्तु कला है।[4] विश्व की सभी कलाओं का जन्म धर्म के साथ ही हुआ है। धर्म ने कला के माध्यम से अपनी धार्मिक मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाया है। भारतीय कला का रूप भी धर्म प्रधान है (अजंता, एलोरा, वाघ की गुफाएं) कला का एक रूप चित्रकला है और चित्रकला ने धर्म को सौन्दर्य और आकर्षण प्रदान किया है।[5] किसी भी युग में देश की धार्मिक मान्यताएं, पौराणिक देवी-देवता, आचार-विचार, परम्परायें चित्रकला में अभिव्यक्त होती है।

प्रतीक एवं चिंह चित्रकला की भाषा होती है। सांकेतिक एवं कलात्मक दोनों प्रतीकों का अत्याधिक महत्व है जैसे स्वास्तिक, सिंह, चक्र, लक्ष्मी, कलश इत्यादि। जैन धर्म में भी इनको प्रयुक्त किया जाता है। चित्रकला में संपूर्ण भारत की शैलियों में जैन शैली का प्रमुख स्थान है। सातवीं शताब्दी में पल्लव नरेश महेंद वर्मन के शासन काल में मिले मूर्तियां, चित्र इनकी प्राचीनता एवं विविधता को वर्णित करते हैं। सित्तानवास (तमिलनाडू) की जैन गुफाओं में जैन (सिद्धों के निवास) के चित्र जैन धर्म की विषय वस्तु पर आधारित है, यह चित्र जैन धर्म के प्रेरक भी हैं। इन चित्रों में प्राचीन काल के साथ मध्ययुगीन प्रभावों को भी प्रदर्शित किया गया है।[6] मध्य भारत में जैन, बौद्ध ग्रंथों की पाण्डुलिपी को भोजपत्रों पर सजाया जाने लगा। मंदिरों, मठों पुस्तकालय में इन्हें दान किया जाने लगा। 1562 के पश्चात् एक नई शैली का विकास हुआ वस्त्र चित्र रचना का प्रारम्भ।[7]

आधुनिक काल में चित्रकला की विषय वस्तु भारतीय सामाजिक जीवन, लोकप्रिय पर्व पर भी आधारित हुई। भारतीय लोगों की कलात्मक शैली पट्टा और कागज के साथ ग्रामीण घरों की दीवारों, पवित्र अवसरों पर रंगोली इत्यादि अलंकृत चित्रकला डिजाइन के रूप में विकसित हुई जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया गया। इन्हीं का रूप मांडना है जिसे जैन धर्म में 'मण्डल' कहा गया है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं मण्डल विधान पर आधारित है। जैन धर्म जिसे अनादि धर्म कहा जाता है जिसका न प्रारम्भ है और न अंत है और जिसने अपने को जीत लिया वह जैन है। अर्थात् यहाँ 'जाति' भी महत्वपूर्ण नहीं है। जैन धर्म प्राचीन धर्म है जैसा कि प्रो. जैकोबी के अनवेषण से सिद्ध हुआ कि जैन धर्म बौद्ध धर्म के पहले का है।[8] प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव एवं अंतिम चौबीसवें तीर्थकर महावीर जिन्होंने ईसा से 527 वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया था का उल्लेख ग्रंथों में मिलता है। तभी से जैन धर्म की परम्परा अनवरत चल रही है।

प्रत्येक धर्म का उद्देश्य जीवन के परमलक्ष्य को प्राप्त करना है, आत्मकल्याण करना व समाज कल्याण करना है। इसकी कार्यरूप पूजा में दिखाई देता है। जैन दृष्टि में द्रव्य और भाव पूजा के दो रूप हैं जिसका वास्तविक अर्थ मौलिक सुख की प्राप्ति न होकर अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के लिए इष्ट या आराध्य के पवित्र गुणों का कीर्तन करना है। अर्थात् जैन धर्म व्यप्रिधान न होकर गुण प्रधान है। जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जैन धर्म में सम्यक दर्शक, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र को रत्नत्रयी माना गया है। प्रथम दो साधन स्वरूप हैं तीसरा साध्य रूप है। जैन मण्डल विधान इसी पर आधारित है। इन मण्डल विधानों में भौगोलिक,

ज्ञानात्मक, दार्शनिक पक्ष भी समाहित हैं और इसका भक्ति पक्ष उस पर आचरण करने को प्रोत्साहित करता है।[9]

प्रासंगिकता –

वर्तमान भौतिकवादी, उपभोगवादी (अ) संस्कृति से अक्रांत समाज, राष्ट्र, विश्व जो मूल्य विहीनता की ओर अग्रसर हो रहे हैं - ऐसे समय में विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित अहिंसावादी जैन धर्म के सिद्धांत बिना किसी भेदभाव के विश्व -बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत हैं। अहिंसा के साथ सत्य, समता, स्वतंत्रता, समदर्शिता, सहिष्णुता, विश्वप्रेम, अनेकांत एवं स्याद्वाद जैसे उदारवादी सिद्धांतों का प्रतिवादक है जैन धर्म। अनेकान्तात्मक स्वरूप के कारण विश्व में प्रचलित मतमतान्तरों को समन्वयात्मक भाव द्वारा एकता के सूत्र में पिरोने में सक्षम है।[10] जो वर्तमान बारूद के ढेर पर खड़े विश्व समाज की प्रथम प्राथमिकता है। जैन संस्कृति/धर्म में इस कल्याण निधि से मानव मन विशेषकर युवापीढ़ी को परिचित कराने के लिए मंडल विधान विधि है जो जीवन के उत्कर्ष के लिए अप्रतिम है। जैन धर्म में विधान को शाश्वत ग्रंथराज कहा जाता है जिन्हें वैज्ञानिक तरीके से बनाये गये चित्रों ''मण्डल'' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

मण्डल क्या है : पूज्य परम देवों के प्रकार, परमेष्ठी-देवों के भेद, प्रमुख गुण और उनके प्रकारों एवं व्रत, तीर्थक्षैत्र - इनको सामान्य दृष्टि से जानने के लिए जो रेखा-चित्र बनाया जाता है उसे मण्डल (माँडना) कहते हैं, इनको यथाथोग्य फलक (पाटा) पर बनाकर प्रतिमा या यंत्र के सामने स्थापित किया जाता है। मंत्र सहित बने रेखाचित्र को यंत्र कहते हैं, जिसका उपयोग विशेष पूजा, विधान, व्रतोद्यापन पूजा, प्रतिष्ठा कार्यों में नियमतः किया जाता है। इसी तरह गृहशांति, नवीन गृहोद्‌घाटन, अंखड कीर्तन आदि विशेष अवसरों पर भी मण्डल अथवा यंत्र का उपयोग अनिवार्य है। इस धार्मिक पूजा अनुष्ठान आदि में जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत यह मण्डल प्रणाली वैज्ञानिक एवं युक्तिपूर्ण है।[11]

वर्तमान काल में राष्ट्र, देश, प्रांत, प्राकृतिक दृश्य, पर्वत, नदी, क्षैत्र, उद्यान आदि वस्तुओं को जानने के लिए आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी रेखाचित्र के अविष्कार किये हैं। व्यंग्य चित्र, मकानों के रेखाचित्र भी बनाये जाते हैं। स्पष्ट और कठिन विषय को सरलता से समझने के लिए रेखाचित्र/मण्डल के उपयोग लोक व्यवहार के लिए किये जाते हैं। इन मंडलों के आकर्षक रूप का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी मानव मन पर पाया जाता है।

मण्डल की स्थापना

मण्डल लकड़ी के पाटा पर बनाये जाते हैं चारों ओर अष्टद्रव्य (जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल) और अष्ट प्रतिहार्य (सिंहासन, अशोक वृक्ष, छत्रत्रय, भामंडल या प्रभा मंडल, दिव्य ध्वनि, सुरपुष्प वृष्टि, चंवर, देवदुन्दुमी) सजाये जाते हैं। श्री जी मंडल से अलग टेबिल पर विराजमान होते हैं। मण्डल में आकृति एवं रंगों का भी वैज्ञानिक महत्व है।

मंडल रचना - मंडल विधान चावल पीसकर, मोरधान, रांगोली इत्यादि विभिन्न प्रकार रंगों से बनाये जाते हैं। इन्हें छने जल से धोकर, सभी धार्मिक क्रियाओं का विवेकपूर्वक पालन किया जाता है।

जैन दर्शन में विशेष पूजा को विधान कहते हैं इनमें विधान मण्डल (गुणों का रेखाकार चित्र) को सामने बनाकर पूजा की जाती है।[12] प्रत्येक श्रावक (व्यक्ति) की इच्छा लौकिक सिद्धि एवं लाभ प्राप्त करने की होती है, व्यक्ति जब एकाग्रतापूर्वक विषय कषायों से मुक्त होकर विधिपूर्वक पूजा-अर्चना करे तभी वांछित लाभ की प्राप्ति होती है, पापकर्मों का नाश होकर पुण्योपार्जन प्राप्त होता है। इहलोक, परलोक सुधरता है और समाज

कल्याण होता है। वर्तमान काल में अशांति, असत्य, हिंसा, तृष्णा, क्रोध आदि अंतरंग शत्रुओं का शमन करने के लिए अथवा सुसंस्कृत जीवन के विकास के लिए परमात्मा व परमेष्ठी, परमदेवों की उपासना, स्तुति, प्रणति आदि करना मानव मात्र की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये प्रस्तुत शोध पत्र में जैन संस्कृति/धर्म में चित्रकला मण्डल विधान के विशेष संदर्भ में प्रस्तुत की गई है। प्रत्येक मण्डल विधान के अलग उद्देश्य हैं।

जैन मण्डल विधान अपने आप में एक ग्रंथ है। जैन धर्म में प्रमुख मण्डल विधान को निम्न भागों में विभक्त किया गया है।

अ - जैन भूगोल संबंधी मंडल विधान

01. श्री तीन लोक मंडल विधान, 02. श्री सर्वतोभद्र मण्डल विधान, 03 श्री जम्बूद्वीप मंडल विधान, 04. श्री अढ़ाईद्वीप मण्डल विधान,05. श्री इन्द्रध्वज या तेरहद्वीप मण्डल विधान, 06. श्री पंचमेरू मण्डल विधान,07. श्री नन्दीश्वर मण्डल विधान, 08. युग परिवर्तन कालचक्र चित्र

ब - जैन दर्शन संग्रह संबंधी मण्डल विधान

01. श्री तत्वार्थ सूच मण्डल विधान, 02. श्री सैंतालीस मण्डल विधान,03. श्री प्रवचन सागर मण्डल विधान, 04. श्री नियमसार मण्डल विधान,05. श्री अष्टपाहुड मण्डल विधान, 06. श्री समयसार मण्डल विधान,07. श्री पंचास्तिकाय मण्डल विधान

स - जैन चरित्र संग्रह संबंधी मण्डल विधान

01. श्री सोलह कारण मण्डल विधान, 02. श्री द्वादशलक्षण मण्डल विधान,03. श्री लब्धि मंडल विधान, 04. श्री सुगंधदशमी मण्डल विधान,05. श्री श्रवण द्वादसी या कांजीवारस मंडल विधान,06. श्री अनंत चतुर्दशी मंडल विधान07. श्री रत्नत्रय मंडल विधान

द - श्री भक्ति संग्रह संबंधी मण्डल विधान

01. श्री जिनवाणी मंडल विधान, 02. श्री पंचपरमेष्ठी मंडल विधान,03. श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान, 04. श्री योग मण्डल विधान,05. श्री धर्मचक्र मण्डल विधान, 06. श्री कल्पद्रुमन समवसरण मंडल विधान07. श्री चरित्र शुद्धि मंडल विधान, 08. श्री चौसठ} द्धि मंडल विधान
09. श्री पंचकल्याण मंडल विधान, 10. श्री सम्मेद शिखरनी मंडल चित्र
11. श्री भक्ताम्बर मंडल विधान, 12. श्री कर्मदहन मण्डल विधान,
13. श्री गणधर वलय व ऋद्धि मण्डल विधान

इ - विविधा मण्डल विधान

01. श्री शांति मण्डल विधान, 02. श्री तीस चौबीसी मंडल विधान,
03. श्री शांति विधान मण्डल विधान, 04. श्री विधमान बीसवीर्थंकर मण्डल,
05. श्री चौबीस तीर्थकर मण्डल विधान, 06. श्री रविव्रत मण्डल विधान,
07. श्री नवग्रह मण्डल विधान, 08. श्री णमोकार पेंतीस मण्डल विधान,
09. श्री जिनगुण सम्पत्ति मंडल विधान, 10. श्री जिन सहस्त्रनाम मंडल विधान

उपर्यु मण्डल विधानों के अतिरिक्त भी वर्तमान समय में आचार्यश्री द्वारा नये मण्डल विधानों की रचना भी की गई है अतः मण्डल विधानों की संखया में वृद्धि हो गई है।

इन मण्डल विधानों में एक दशलक्षण मंडल विधान की व्याख्या प्रस्तुत है। इसे जैन धर्म में दशलक्षण पर्व के रूप में मनाते हैं और वर्ष में तीन समय आते हैं चैत्र, भाद्रपद व माघ मास में भाद्रपद के दशलक्षण पर्व का अधिक महत्व है। इसमें दस धर्मों (कर्त्तव्यों) का उल्लेख किया गया है जो प्रत्येक मानव में होना चाहिये। ईसा

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592555

से 18वीं सदी में कविवर द्यानतराय ने इस पूजा की रचना की थी। यह दस धर्म है - उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आंकिचन, ब्रह्मचर्य।

उत्तम क्षमा - क्रोध, बैर को जीतना उत्तम क्षमा कहलाता है। क्रोधी अपना और दूसरों का अहित करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को साम्य भाव रखना चाहिए। गांधीजी ने कहा था कोई एक गाल पर चाँटा मारे तो दूसरा गाल आगे कर दें। इन विकारों पर विजय उत्तम क्षमा धर्म है।

उत्तम मार्दव धर्म - ''मृदुभाव इति मार्दव'' याने सरल और कोमल भाव रखना। ज्ञान, धन, कुल, जाति, बल, सिद्धि, तप, शरीर उनके मद में जो भाव आते हैं उसे मान कहते हैं। अतः इन्हें छोड़ना चाहिए।

उत्तम आर्जव धर्म - मन, वचन, काय से कुटिल कार्यों को न करना आर्जव धर्म कहलाता है। कष्टी, दुष्ट, वक्र, अभिमानी व्यक्ति का कोई विशवास नहीं करता। मायाचारी छोड़ना चाहिए। ''मन में होय सो वचन उचरिए'' ही आर्जव धर्म है।

उत्तम शौच धर्म - सुचिता याने पवित्रता का नाम शौच है परंतु यहाँ देह की पवित्रता नहीं मान, लोभादि को दूर कर पवित्र शांत चित्त (मन) को शौच धर्म कहते हैं।

उत्तम सत्य धर्म - व्यवहार में झूठ न बोलने के साथ ही वाणी में सत्यता व संयम रखना। हितमित प्रिय वचन बोलना ही सत्य धर्म है। किसी का मन न दुखे ऐसे वचन बोलें। किसी के जीवन की रक्षा करने कहा झूठ भी इसी धर्म में आता है।

उत्तम संयम धर्म - मन व इन्द्रियों को वश में करना संयम धर्म कहलाता है। षटकाय के जीवों की रक्षा व पचेन्द्रियों व मन को वश में करना संयम धर्म है। संयम के बिना तपस्या व्रतादि सब निष्फल हैं।

उत्तम तप धर्म - इच्छाओं का निरोध करना तप कहलाता है। समस्त रागादि भावों का त्याग कर, विकारों को जीतना, आत्मस्वरूप में लीन होना तप कहलाता है। यह उपचार है रागद्वेष को जीतना।

उत्तम त्याग धर्म - व्यवहार में औषधी, शास्त्र, अभय व आहार दान को त्याग कहते हैं परंतु त्याग दान से भिन्न है। त्याग धर्म व दान पुण्य है। त्याग से तात्पर्य रंचमात्र भी परिग्रह का न होना है।

उत्तम अकिंचन धर्म - राग, द्वेष, मोह, कामादि मैल से विरक्त होना अकिंचन धर्म कहलाता है। परिग्रह 24 प्रकार के हैं उनसे हटना ही अकिंचन धर्म है।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म - समस्त विषयों से अनुराग छोड़कर अपने ब्रह्म (ज्ञायक स्वरूप) में लीन होकर प्रवृत्ति करना ब्रह्मचर्य है। अर्थात् व्यवहार से कुशील का त्याग करना व निश्चय से आत्मरमणता ही ब्रह्मचर्य धर्म है।

इन दस धर्मों के स्वरूप के आधार पर ही मंडल विधान की रचना की गई है। जैसा कि चित्र में दिया गया है।

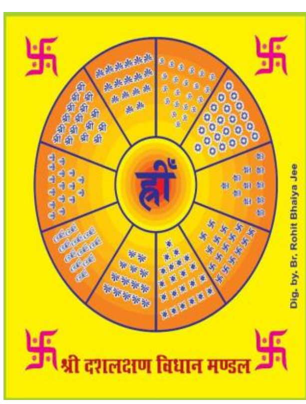

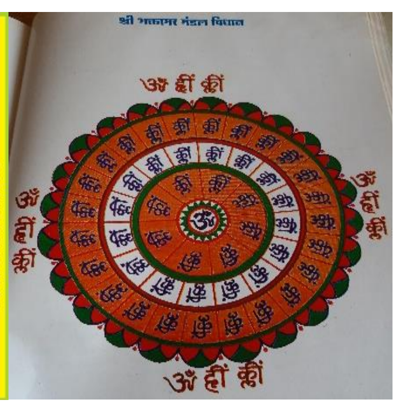

पंचपरमेष्टी मंडल विधान –
पूजा के उपरांत

निष्कर्ष-

उपयुक्त सभी मण्डल विधानों की सचित्र रचना मानव के इहलोक और परलोक के कल्याण के लिए की गई है। प्रत्येक मंडल विधान एक पूर्ण ग्रंथ है। वर्तमान समय में चित्र- दृश्य माध्यम की ओर मनुष्य अधिक आकर्षित होता है। मण्डल विधान का वास्तविक अर्थ अतीन्द्रीय सुख की प्राप्ति, आराध्य के गुणों का कीर्तन है। जो व्यक्तिगत जीवन को पवित्र करते हैं इससे सामाजिक और पारिवारिक जीवन भी पवित्र हो जाता है। आज का भौतिकवादी युग जहां मानव विद्रोही स्वार्थी होता जा रहा है फैशन, भोगवाद, अपराधी वृत्ति में लिप्त है, हत्या, व्यभिचार की घटनायें मिनटों में हो रही है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति जीवन की पवित्रता से मानव हृदय, वचन और शरीर की शुद्धि होती है अर्थात् पवित्रता आती है। इससे राष्ट्रीय जीवन के नियम भी पवित्र हो जाते हैं और लोक शुद्धि हो जाती है। इस प्रकार जैन संस्कृति के सिद्धांत मंडल विधान के माध्यम से विश्वप्रेम, विश्व संवेदना, विश्वहित के भावनाओं सिद्धांत को प्रवाहित करते हैं जो वर्तमान विश्व की आवयश्कता है।

संदर्भ

[1] रावत, हरिकृष्ण - समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 69
[2] डेविस किंग्सले - मानव समाज, पृ. 509
[3] दुर्विवम, इमाइल
[4] प्रताप, डा. रीता - मारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. .7
[5] प्रताव, डा. रीता - मारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. .7
[6] https//hi.m.wikipedia.org/wiki भारतीय चित्रकला, अक्टूबर 2019
[7] https//hi.m.wikipedia.org/wiki भारतीय चित्रकला, अक्टूबर 2019
[8] पाटनी मंजू, मोदी निशा - ''जैन धर्म-दर्शन इतिहास एवं साहित्य, पृ. 209 जे.एस.एम. पब्लिकेशन, इन्दौर ISBN-978-81-926330-1-5
[9] श्री जैन मंडल विधान विधी एवं चित्र - संकलनकर्ती प्रभावती कासलीवाल विशारद, संशोधन श्री पं. रतनलाल जी शास्त्री, राजेश प्रिटिंग प्रेस, उज्जैन
[10] जैन - पंडित नाथूराम डोंगरीय - जैन-धर्म - विश्वधर्म कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर
[11] जैन डॉ. दयाचन्द्र, साहित्यचार्य - जैन पूजा - काव्य एक चिंतन (2003) भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पृ. 401
[12] जैन डॉ. दयाचन्द्र, साहित्यचार्य - जैन पूजा - काव्य एक चिंतन (2003) भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पृ. 401